REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

सिनेमा के द्वारा राजनीतिक प्रचार-प्रसार : एक अध्ययन (2014 से वर्तमान तक के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अमिता
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर , पत्रकारिता एवं जनसम्प्रेषण विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

प्रस्तावना :

सिनेमा जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है. सिनेमा के द्वारा दिखाए गए संदेशों का दर्शकों पर बहुत ही गहरा असर पड़ता है. सिनेमा का प्रयोग समय-समय पर मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए भी किया जाता रहा है. लेकिन विगत कुछ वर्षों बॉलीवुड में सिनेमा का प्रयोग राजनीतिक संचार के लिए भी किया जाने लगा है. वास्तव में सिनेमा के राजनीतिक प्रयोग का एक लंबा इतिहास रहा है. द्वितीय विश्व युद्ध में राजनीतिक प्रोपेगेंडा फैलाने के लिए सिनेमा का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया था. उस दौरान ज्यादातर फिल्में युद्ध से संबंधित निर्मित की गई थी जिसके अंतर्गत युद्ध के प्रयासों को न्यायसंगत ठहराया गया. उदाहरण के लिए द लॉयन हेज विंग्स **(1939),** द कॉल फॉर आर्म्स **(1940),** द बैटल ऑफ लंदन **(1941)** और क्रिसमस अंडर फायर **(1941)** इत्यादि.

सोवियत संघ ने भी अपने साहित्य, कला और सिनेमा द्वारा राजनीतिक संचार का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया था. उन्होंने अपनी कलाकृतियों में सामाजिक यथार्थवाद के पक्ष को प्रमुखता से उभारा. सामाजिक यथार्थवाद के अंतर्गत इस चीज को प्रचारित किया गया कि सभी कामगार वर्ग नायक हैं जबकि पूंजीपति वर्ग को हमेशा खलनायक की भूमिका में रखा गया. उदाहरण के तौर पर **1934** में निर्मित **Vasilyev brothers** द्वारा निर्देशित फिल्म **Chapaev और 1934 में ही DzigaVertov द्वारा निर्देशित Three Songs about Lenin** को लिया जा सकता है. दूसरी तरफ पूंजीवादी देशों की सिनेमा का प्रतिनिधित्व कर रही हॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री ने हमेशा अमेरिका को प्रभुत्वशाली भूमिका में रखा और अपनी बाइनरी ऑपोजिट विचारधारा वाले देशों को विलेन के रूप में दिखाया. उदाहरण के लिए **John Moore** द्वारा निर्देशित **"A Good Day to Die Hard" (2013)** फिल्म में ऐसा देखा जा सकता है. वहीं हमें जेम्स बांड की फिल्मों में अक्सर देखने को मिलता है जहां अधिकतर खलनायक रूस के होते हैं.

भारतीय सिनेमा में भी हर विचारधारा के अनुसार फिल्में बनी हैं चाहे वह समाजवादी हो, पूंजीवादी हो, वामपंथी हो या राष्ट्रवादी हो. सिनेमा के शुरुआती दौर को देखें तो यह समाजवादी विचारधारा से प्रभावित रहा. राज कपूर की फ़िल्में आवारा, जिस देश में गंगा बहती है, बूट पॉलिश, श्री 420 इत्यादि में हाशिये के लोग और मज़दूर वर्ग को मुख्य रूप से केंद्रित किया गया था. विगत कुछ वर्षों में भारत में फिल्मों का प्रयोग राष्ट्रवादी विचारधारा फैलाने के लिए किया जा रहा है. प्रस्तुत पत्र यह देखने का एक प्रयास है कि वर्तमान समय में सिनेमा का राजनीतिक संचार के लिए प्रयोग किन-किन फिल्मों द्वारा हो रहा है.

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध पत्र सिनेमा के द्वारा राजनीतिक प्रचार-प्रसार: एक अध्ययन (2014 से वर्तमान तक के विशेष संदर्भ में) में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है. शोध विधि के अंतर्गत अंतर्वस्तु विश्लेषण और अवलोकन का चयन किया गया है.

शोध पत्र में सिनेमा का राजनितिक संचार हेतु किस प्रकार प्रयोग किया जा रहा है उसके लिए निम्नांकित फिल्मों का अध्ययन किया गया है.

टॉयलेट: एक प्रेम- कथा (2017)

भारत एक ऐसा देश है जिसमें इसकी आबादी की पर्याप्त पानी और स्वच्छता सेवाओं तक पहुंच के संबंध में ऐतिहासिक अंतराल है. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और संयुक्त राष्ट्र बाल कोष के अनुसार **2015** में भारत की **40** प्रतिशत जनसंख्या खुले में शौच करती है, जो सभी देशों में सर्वाधिक अनुपातों में से एक है.[1] इससे अनेक बीमारियां उत्पन्न होती हैं तथा महिलाओं के लिए यह काफी असम्मानजनक भी है. इस समस्या को दूर करने के लिए वर्तमान सरकार ने 'पहले शौचालय, फिर देवालय' तथा 'जहां सोच वहीं शौचालय' का नारा दिया. इस योजना के क्रियान्वयन के लिए वर्तमान केंद्र सरकार ने देश के गांव-गांव में शौचालयों का निर्माण करवाया. सरकारी आंकड़ों के अनुसार, "स्वच्छ भारत मिशन" की शुरुआत **2 अक्टूबर 2014** से लेकर अब तक लगभग **10** करोड़ शौचालयों का निर्माण कराया जा चुका है. इस वित्त वर्ष **(2019-20)** में भी अब तक लगभग **12** लाख से अधिक शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है. सरकार के मुताबिक भारत के **27** राज्य केंद्र शासित प्रदेश 'खुले में शौच से मुक्त' **(ODF)** हो चुके हैं और आज वर्तमान तक **98•6%** घरों में शौचालय मौजूद हैं.[2]

टॉयलेट: एक प्रेम-कथा फिल्म, वर्तमान केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना का राजनैतिक प्रचार-प्रसार करती प्रतीत होती है. यह फिल्म एक नवविवाहित प्रेमी युगल की सांसारिक जरूरतों में टॉयलेट की अहमियत को केंद्रित करती हैं. फिल्म में अहम किरदार की भूमिका निभा रहे नायक को अपनी पत्नी से शौचालय की वजह से अलगाव सहन करना पड़ता है. फिल्म की कहानी के

माध्यम से शौचालय की समस्या को दिखाने का प्रयास किया गया है. फिल्म में प्रयुक्त संवाद पर नजर डालें तो यह सरकार के मिशन के इर्द-गिर्द घुमती हुई प्रतीत होती है. फिल्म में दर्शाए गए एक सीन में जिसमें डीएम सरकारी शौचालयों के निर्माण के आंकड़ों को दिखाता है जिसमें पूरी पंचायत समिति, ब्लॉक और जिलावार सूची होती है. यहां फिल्म कहीं न कहीं सरकार द्वारा देशभर में शौचालय की सुविधा और आर्थिक मदद को भी प्रचारित- प्रसारित करती हुई दिखती है. फिल्म की कहानी इस तरह से रची गयी है कि कोई भी आम दर्शक सरकार द्वारा दी गई इस सुविधा को ही नहीं समझता बल्कि उस सोच और विचार से भी सहमत हो जाता है जिसमें हमारी प्राचीन रूढ़ियां आड़े आती हैं फिर भी सरकार अपनी नीतियों तथा क्रियाकलाप को जनहित में जारी रखती है और आम जनता की जरूरत और जागरूकता के लिए सतत प्रयत्नशील रहती है. पूरी फिल्म देखने के बाद एक आम दर्शक यह राय जरूर ही बना लेता है कि सरकार हमारे विकास के लिए पूरी जद्दोजहद कर रही है. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि फिल्म ने सरकार की नीति के प्रचार -प्रसार में अपनी काफीहद तक भूमिका अदा की है जिसमें शौचालय के बारे में सामाजिक जागरूकता का श्रेयसरकार को मिलता है.

उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक (2019)

हम देखते हैं कि पाकिस्तानी सेना द्वारा आये दिन हमलों और पकिस्तान को लेकर उदारवादी छवि की वजह से देश की जनता में काफी गुस्सा और आक्रोश व्याप्त था. सरकार ने 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक करके अपनी इस उदारवादी छवि को तोड़ने का प्रयास किया. भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सीमा में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया जिसमें पकिस्तान के कई आतंकी ठिकानों को नष्ट कर दिया गया. इस घटना से वर्तमान सरकार को देश भर में व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ और देशभक्ति व्यक्त करने के लिए सारा देश तिरंगा लिए सड़कों पर आ गया.

उरी द सर्जिकल स्ट्राइक इसी घटना पर आधारित बनी एक राष्ट्रवादी फिल्म है. यह फिल्म **11 जनवरी 2019** को रिलीज हुई[3] जिसमें **सितंबर 2016** में भारतीय सेना के द्वारा किए गए सर्जिकल स्ट्राइक को दिखाया गया. इस फिल्म के प्रदर्शन के पश्चात देश भर में भारतीय सेना द्वारा किए गए इस कार्य से देशभक्ति और राष्ट्रवाद का माहौल बन गया. फिल्म का डायलॉग' **How's the Josh'** हर किसी के जुबान पर चढ़ गया था. उरी के प्रोड्यूसर रॉनी स्क्रूवाला ने भी फिल्म के बारे में कहा था कि "इस फिल्म को बनाने का उद्देश्य देशवासियों के दिलों में गर्व का अहसास कराना था और इस बात का अहसास दिलाना भी था कि हमारी सेना कितना कमाल का काम कर रही है[4]

उरी द सर्जिकल स्ट्राइक फिल्म से वर्तमान सरकार की राष्ट्रवादी छवि और भी मजबूत हुई. फिल्म में रची गई कहानी न केवल भारतीय सेना के शौर्य गाथा को दिखलाती है बल्कि सरकार के रणनीतिक कौशल का परिचय करा उसकी सकारात्मक और मजबूत छवि गढ़ने का कार्य करती है.फिल्म के एक सीन में मीडिया भारत को न केवल एशिया बल्कि विश्व की बड़ी महाशक्ति के रूप

में प्रस्तुत करती है. साथ ही फिल्म के एक अन्य सीन में इंटेलिजेंस के तकनीकी कौशल और बेहतर सूझबूझ से भारतीय सेना को पहुंचाए गए लाभ को दिखाते हुए सरकार द्वारा उन्हें इस कार्य के लिए दी गई विशेष छूट की ओर भी इशारा करती है.साथ ही सेना के उन अधिकारियों को जो इस अभियान से जुड़े रहे उन्हें खुलकर अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग करते हुए दिखाया गया है. फिल्म में प्रस्तुतिकरण के विशेष रूप से यह स्पष्ट दिखाई देता है कि सरकार की छवि निर्माण में इस फिल्म ने अहम भूमिका निभाई है. फिल्म में सरकार की निर्णय शैली, जवाबी सोच और पड़ोसी मुल्क के नापाक मंसूबों को रणनीतिक सूझबूझ से धराशाही करने का वाला सीन सत्तासीन दल की न केवल देश में वाहवाही कराने का काम करता है बल्कि सिनेमा का यह माध्यम उसे तात्कालिक राजनीतिक लाभ पहुंचाने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है.

परमाणु (2018)

सन **1998** में भारत ने पोखरण परमाणु परीक्षण कर विश्व में परमाणु शक्ति संपन्न देशों की सूची में अपना नाम दर्ज करा दिया था. पोखरण परीक्षण रेंज पर 5 परमाणु बम के परीक्षणों से भारत पहला ऐसा परमाणु शक्ति संपन्न देश बन गया, जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए थे।[5] वास्तव में यह परमाणु परीक्षण समकालीन सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रतिफल था. इस ऐतिहासिक घटना को भारतीय इंजीनियर्स, सेना के अधिकारियों और वैज्ञानिकों ने खुफिया तरीके से अंजाम दिया था. भारतीय कुशल रणनीति ने अमेरिका को भी मात दे दी थी जिसके सैटेलाइट इस घटना को अपने कैमरे में कैद नहीं कर पाए और भारतीयों ने सीआईए की आंखों में धूल झोंककर इस परिक्षण को अंजाम दिया था.[6]

फिल्म 'परमाणु: द स्टोरी ऑफ पोखरण' (25 मई 2018) में इसी घटना को दर्शाया गया है कि किस तरह से तमाम विपत्तियों से लड़ते हुए इन भारतीयों ने अपने मिशन में सफलता पाई. फिल्म के माध्यम से भारतीय राजनीति में एक अहम व ठोस कदम लेने वाली तत्कालीन भारतीय जनता पार्टी सरकार की छवि को दर्शकों के मन में नए सिरे से गढ़ा गया है. इस फिल्म जरिये सन **1998** की तत्कालीन सरकार की परमाणु परीक्षण को लेकर दृढ़इक्छा शक्ति को दिखाया गया है जिससे यह संदेश दर्शकों में जाता है कि इस पार्टी की रुचि व संकल्प ही थी जिसकी वजह से यह परमाणु परीक्षण संभव हो पाया.फिल्म मेंयह दिखाने का प्रयास किया गया है कि विगत सरकार के चलते यह अहम कार्य ठंडे बस्ते में चला गया था जो कि सरकार के पुनर्गठन के पश्चात पुनः जीवित हुआ और श्री अटलबिहारी वाजपेयीजी की विशेष रूचि इस परमाणु परीक्षण में दिखाकर दर्शकों के मन में भी तत्कालीन प्रधानमंत्री की छवि व उसी सोच को दर्शकों के सामने उकेरा गया है. सार रूप में कहा जाए तो फिल्म में बहुत ही प्रभावी ढंग व बेहद चालाकी से एक पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचाया गया वहीं दूसरी पार्टी की कार्यशैली को महिमामंडित करके लोगों में उसकी नई सकारात्मक व तीव्र निर्णय लेने वाली दृढ़ संकल्पित छवि को उकेरा गया.

पैडमैन (2018)

पीरियड्स यानी माहवारी एक ऐसा विषय है जिसके संबंध में आज भी हमारे समाज में खुलकर बात नहीं की जाती. आज भी पीरियड्स के संबंध में लोगों का ज्ञान आधा-अधूरा ही है.[7] लड़कियों और महिला द्वारा मासिक धर्म के दौरान होने वाले रक्त स्राव को सोखने केलिए सैनिटरी नैपकिन का प्रयोग किया जाता है. 2015-16 की नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे रिपोर्ट के अनुसार शहरी इलाकों में 77.5 फीसदी महिलाएं सैनिटरी नैपकिन का इस्तेमाल करती हैं. गांवों के मामले में ये आंकड़ा शहरों के मुकाबले आधे से कुछ ज्यादा है. रिपोर्ट के मुताबिक गांवों में 48.5 फीसदी महिलाएं सैनिटरी पैड का इस्तेमाल करती हैं – और औसत देखा जाये तो 57.6 यानी आधे से ज्यादा महिलाओं की आबादी इस का इस्तेमाल करती है.[8] सैनिटरी पैड के बारे में समाज को जागरूक करने के विषय को लेकर सन 2018 में 'पैडमैन' फिल्म बनी. इस फिल्म के माध्यम से निर्माता-निर्देशक ने एक ऐसी सामाजिक बुराई की तरफ हमारा ध्यान खींचा है जो बहुत ही सामान्य प्रतीत होती है परन्तु आधी आबादी के लिए यह एक गंभीर समस्या है. यह फिल्म महिलाओं के स्वास्थ्य पर केन्द्रित है. 'सेनेटरी पैड' विषय पर केंद्रित इस फिल्ममें विभिन्न किरदारों बहन, बेटी,पत्नी, मां इत्यादि के माध्यम से मासिक धर्म की परेशानी का एहसास सामान्य जन को कराने की कोशिश की गई है. यह फिल्म सामाजिक जागरूकता के साथ-साथ वर्तमान सरकार की नीतियों के प्रचार-प्रसार करने जैसी प्रतीत होती है. फिल्म में सरकार द्वारा सेनेटरी पैड पैकेट की कीमत को घटाने वाला संवाद भी सरकारी योजना के प्रचार-प्रसार करने जैसा लगता है और सरकार द्वारा इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए इस क्षेत्र में उठाए गए विशेष कदम की तरफ इशारा करता है. उल्लेखनीय है कि 2018 में ही सरकार ने महिला वोट को ध्यान में रखते हुए सैनिटरी नैपकिन पर से जीएसटी 12 प्रतिशत से शून्य तक कमकर दिया. सरकार के इस फैसले को महिलाओं ने काफी सराहा था.[9] वहीं फिल्म के प्रमोशन में भी राजनीतिक संचार का प्रचार-प्रसार देखने को मिलता है जहाँ प्रमुख किरदार अक्षय कुमार ने दिल्ली यूनिवर्सिटी में **ABVP** का झंडा हाथ में लेकर 'पैडमैन' का प्रमोशन किया था.[10]

द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर (2019)

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है इस फिल्म के शीर्षक से भूतपूर्व प्रधानमंत्री की ऐसी छवि गढ़ने की कोशिश की गई है कि वह एक जन नेता ना होकर दुर्घटनावश प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हो गए हैं. यह फिल्म भारतीय राजनीति में चल रहे हैं घमासान, उठा -पलट के बीच शांतिपूर्वक ढंग से देश हित को सर्वोपरि रख कार्य कर रहे प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान की है. फिल्म के माध्यम से जहां एक राजनीतिक पार्टी की छवि के साथ छेड़छाड़ की गई है या यूं कहें कि बिगाड़ने की कोशिश की गई है. 'द एक्सिडेंटल प्राइम मिनिस्टर **(The Accidental Prime Minister)** की शुरुआत 2004 में सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री पद छोड़ने के साथ होती है और फिर मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाया जाता है. इसके बाद जर्नलिस्ट संजय बारू की एंट्री होती है

और मनमोहन सिंह के चहेते होने की वजह से वे उनके मीडिया एडवाइजर बन जाते हैं. मनमोहन सिंह सोनिया गांधी का सम्मान करते हैं, संजय बारू की भाषा में कहें तो सोनिया गांधी जैसा मनमोहन सिंह को डिक्टेट करती हैं वो वैसा ही करते हैं. इस तरह से उनकी अपनी कोई छवि नहीं बन पाती और वह केवल पपेट प्रधानमन्त्री बन कर रह जाते हैं. फिल्म के संवाद पर गौर करें तो यह स्पष्ट नजर आता है कि 2019 केचुनावीसमय में यह विपक्षी पार्टी को कमजोर करने का एक प्रयास है जैसे- मुझे तो डॉक्टर साहेब भीष्म जैसे लगते हैं. जिनमें कोई बुराई नहीं है. पर फ़ैमिली ड्रामा के विक्टिम हो गए. महाभारत में दो परिवार थे. इंडिया में तो एक ही है. पूरे दिल्ली के दरबार में एक ही तो ख़बर थी कि डॉक्टर साहेब को कब कुर्सी से हटाएंगे और कब पार्टी राहुलजी का अभिषेक करेगी. मैं इस्तीफ़ा देना चाहता हूं. एक के बाद एक करप्शन स्कैंडल. इस माहौल में राहुल कैसे टेकओवर कर सकता है आदि. इस तरह से 'द एक्सीडेंटल प्राइममिनिस्टर' फिल्म एक पार्टी विशेष को लाभ पहुंचाने तथा विपक्ष की छवि को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करती दिखाई देती है.

निष्कर्ष:

उपर्युक्त फिल्मों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक संचार के लिए सिनेमा का प्रयोग बहुत बारीकी से किया जा रहा है. फिल्मों के अंतर्वस्तु विश्लेषण से यह दृष्टिगोचर होता है कि राजनीतिक संचार के लिए चार महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जोर दिया गया है वे चार विषय है-देशभक्ति, राष्ट्रवाद, सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रसार करना और वर्तमान सत्ता के पक्ष को जायज़ ठहराना.एक ओर जहां उपरोक्त फिल्मों ने देश में वर्तमान सत्ता पक्ष के लिए सकारात्मक छवि बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है वहीं दूसरी ओर विपक्ष की छवि को धूमिल करने का प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है. निश्चय ही फिल्म केवल मनोरंजन का ही माध्यम नहीं है बल्कि यह एक खास विचारधारा के पक्ष और विपक्ष में विचार निर्मित करने का भी एक सशक्त माध्यम बन गया है.

सन्दर्भ सूची:

[1]**विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और संयुक्त राष्ट्र बालकोष (यूनिसेफ). पेयजल, स्वच्छता और स्वच्छता की प्रगति:** 2017 **अद्यतन और एसडीजी बेसलाइन.**

[2]**Swachh Bharat Mission- Gramin,** Department of Drinking Water and Sanitation**, Ministry of Jal Shakti,** http://swachhbharatmission.gov.in/sbmcms/index.htm

[3]**IMDB,** Uri: The Surgical Strike**,** https://www.imdb.com/title/tt8291224/

[4]**Aaj Tak,** https://aajtak.intoday.in/story/vicky-kaushal-film-uri-the-surgical-strike-will-release-again-on-26-july-tmove-1-1104525.html

[5]**N**avbharat **T**imes**,** https://navbharattimes.indiatimes.com/india/11-may-1998-20-years-of-pokhran-2/articleshow/64118038.cms

[6]**Webduniya,** https://hindi.webdunia.com/bollywood-movie-review/parmanu-the-story-of-pokhran-movie-review-john-abraham-samay-tamrakar-118052500041_1.html

[7] BBC, https://www.bbc.com/hindi/science-41556685

[8] https://www.ichowk.in, https://www.ichowk.in/politics/bjp-eyes-women-vote-via-sanitary-pad-gst-akshay-kumar-may-become-star-campaigner-after-modi/story/1/11799.html
[9] jagran.com, https://www.jagran.com/news/national-no-change-in-price-of-sanitary-napkin-despite-reduce-of-gst-18235390.html
[10] IndiaTvnews, https://hindi.indiatvnews.com/entertainment/bollywood-abvp-flag-in-akshay-kumar-hand-during-padman-promotion-565508

LBP PUBLICATION